B. Ed. 1st year (19-21)

EPC-1

Date 21/05/20

* जैन साहित्य से कथाएँ :-

Introduction :- जैन धर्म को 'श्रमणों का धर्म' कहा जाता है जिसके संस्थापक भारतीय चक्रवती सम्राट भरत 'जिनके नाम पर आज भारत देश है' उनके पिता तीर्थंकर ऋषभदेव थे, जिनका उल्लेख वेदों में भी मिलता है। वैदिक साहित्या-नुसार ये ब्राह्मण परम्परा के न होकर श्रमण परम्परा से संबंध रखते थे। इस धर्म के अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी हुए जिन्होंने जैन धर्म का काफी विस्तार किया और अपने उपदेशों तथा साहित्यों को पवित्र ग्रंथ 'आगम' में संकलित किया तथा अपने शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार किया।

इसप्रकार जैनधर्म में अहिंसा, कर्म, अनेकांतवाद और आत्मशुद्धि पर बल दिया गया है। और साथ ही इस धर्म ने भारतीय संस्कृति, सभ्यता और समाज को विकसित करने में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिसे आज भी देखा जा सकता है।

जैन साहित्य :- जैन साहित्य जैनो का धार्मिक साहित्य है इस साहित्य को संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं में लिखा गया है। चूंकि हम सभी जानते है कि जैन धर्म के संस्थापक ऋषभदेव थे एवं अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी थे जिनके सभी उपदेशों को अर्धमागधी भाषा में जैन धर्म ग्रंथ 'आगम' में संकलित किया गया है जो जैनो का पवित्र ग्रंथ माना जाता है।

आगम शब्द "आ" उपसर्ग और 'गम'

Scanned with CamScanner

धातु से उत्पन्न हुआ है। 'आ' उपसर्ग का अर्थ समन्तात अर्थात पूर्ण और गम धातु का अर्थ गाते प्राप्त है अर्थात जिससे वस्तु तत्व का पूर्ण ज्ञान हो वह आगम है।

आगम ग्रंथ काफी प्राचीन है तथा जो व्याख्यान वैदिक साहित्य क्षेत्र में वेद का है और बौद्ध साहित्य में त्रिपिटक का है वही व्याख्यान जैन साहित्य में 'आगम' का है और इसी के अंतर्गत महावीर स्वामी के उपदेशों तथा जैन संस्कृतियों से संबंध रखने वाली अनेक कथा - कहानियों का संकलन किया गया है।

चूँकि आगम जैन साहित्य का प्राचीनतम भाग है जिसकी संख्या 46 है। लोक कथाओं और भाषा शास्त्र की दृष्टि से यह साहित्य बहुत ही महत्वपूर्ण है अतः इसके अंतर्गत एक कहानी को वर्णित करेंगे —

कहानी का शीर्षक :- 'पाँच दाने चावल के'

राजगृह में धन्य नामक बुद्धिमान व धनी व्यापारी रहता था जिसकी चार पतोहुएं थी जिनके नाम क्रमशः उझिका, भोगवती, रक्षिका तथा रोहिणी था। धन्य अपने परिवार में सबसे बड़ा था और सब परिवार बड़ा आदर - सम्मान करते थे परन्तु उसके मन में सदैव यह विचार आता था कि उसके बाद परिवार का ख्याल कौन रखेगा। इसी उहापोह में एक दिन उसके मन में एक विचार आया और अपने पतोहुओं को बुलाकर सबको पाँच - 2 धान के दाने देकर बोला, जब उसे जरूरत होगी

Scanned with CamScanner

वह उनसे लेगा। तत्पश्चात पिता की आज्ञा लेकर चारों पतोहुएं वहाँ से चली गई।

सबसे बड़ी बहू धान के दानों को फेंक दी और आश्वस्त हुई कि पिता जी जब मांगेंगे तो कोठार से निकालकर दे देगी। वहीं दूसरी बहू धान का छिलका उतारकर खा गई। तिसरी बहू ने धान को पोटली में बाँध सिरहाने रखकर चौकसी करने लगी। चौथी और आखिरी बहू ने धान को अपने नौकर से कहकर क्यारियों में बो दिया और यही प्रक्रिया आगे भी करती गई जिसके फलस्वरूप पाँच दानों से सैकड़ों बड़े धान हो गये और सारे धानों को मोहर बंद कोठारों में भर दिया।

कुछ वर्षों पश्चात् वृन्द ने पुनः अपने पतोहुओं को पास बुलाया और अपने पाँच दाने धान के मांगे। बड़ी बहू ने ससुर के कोठार से पाँच दाने लाकर दे दी, फलस्वरूप ससुर ने पूछा क्या यही दाने हैं तब बड़ी बहू बोली कि वो तो मैंने उसी समय फेंक दिया था, ये दाने आपके कोठार से लाई हूँ, यह सुन ससुर क्रोधित हो उसे झाड़ू-पोछा के काम पर लगा दिया।

तत्पश्चात दूसरी बहू आयी और उससे पूछने के पश्चात् उसे पीसने और रसोई के काम में लगा दिया। तिसरी बहू ने ससुर के समक्ष पाँच दाने रखे जो कि उसके द्वारा दी गई थी जिससे वह प्रसन्न हो माल-खजाने का स्वामिनी बना दिया।

अंत में छोटी बहू आई और ससुर से बोली कि पिताजी वो पाँच दाने लाने के लिए गाड़ियों की आवश्यकता होगी और पूरी वाक्या का वर्णन किया जिसे सुन ससुर काफी प्रसन्न हुए और उसे घर-बार को

मालकिन बना दिया।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि जैन साहित्य जैनो का धार्मिक साहित्य है जिसमें दिये गये उपदेशों और कहानियों को अर्धमागधी भाषा में जैन धर्म ग्रंथ 'आगम' के अंतर्गत संकलित किया गया है। 'आगम' जैन साहित्य का प्राचीनतम अंश है जिसका रचनाकाल 500 ई० पू० माना जाता है ये आगम कथायें अधिकांशतः दृष्टांत कथायें है जो जैनधर्म के उपदेशों का मूल आधार है इसका प्रभाव देश - विदेश के रचनाकारो पर पड़ा है जो आगम कथाओ से काफी प्रभावित दिखाई देते है।